International Journal of Education and Science Research Review
Volume-11, Issue-4 July-August-2024 E-ISSN 2348-6457
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Impact Factor - 7.02 Email- editor@ijesrr.org

राजस्थान के ऐतिहासिक स्थलों का भौगोलिक अध्ययन

Dr.Pawan Kumar

Principal, Franklin girls college

Thalarka,(Hanumangarh) Rajasthan

सार

राजस्थान में पर्यटन विकास का भौगोलिक अध्ययन प्रस्तुत पत्र में किया गया है। इस शोध पत्र में, राजस्थान में पर्यटन के वर्तमान स्वरूप, विशेषताओं और महत्व को समझाया गया है। राजस्थान भारत का एक राज्य है जो पर्यटन के लिए सबसे अच्छा राज्य माना जाता है। राजस्थान राज्य में हर जिले में कई दर्शनीय स्थान देखने को मिलते हैं, विशेषकर एक ऐसा किला है जो लगभग हर जिले में है। इनके अलावा, राजस्थान में कई पौराणिक मंदिर भी हैं। प्राकृतिक सुंदरता और महान इतिहास के साथ राजस्थान में पर्यटन उद्योग फल-फूल रहा है। राजस्थान घरेलू और अंतरराष्ट्रीय दोनों पर्यटकों के लिए एक उपयुक्त पर्यटन स्थल है। भारत आने वाले हर तीसरे पर्यटक को राजस्थान की यात्रा अवश्य करनी चाहिए। विदेशी मुद्रा अर्जित करने के लिए पर्यटन राज्य का दूसरा सबसे बड़ा उद्योग है। विदेशी पर्यटकों के मामले में राजस्थान भारत में 5 वें स्थान पर है। राजस्थान में, जयपुर पहले स्थान पर है और विदेशी पर्यटकों के मामले में उदयपुर पहले स्थान पर है। अधिकांश विदेशी पर्यटक मार्च के महीने के दौरान राज्य में आते हैं। जून के महीने में राज्य में विदेशी पर्यटकों की संख्या सबसे कम है। देशी पर्यटकों के मामले में राजस्थान भारत में 7 वें स्थान पर है। राजस्थान में देशी पर्यटकों के दृष्टिकोण से, पहला स्थान अजमेर का है और दूसरा स्थान पुष्कर का है। सितंबर महीने के दौरान अधिकांश देशी पर्यटक राज्य में आते हैं। राज्य में जून के महीने में सबसे कम देशी पर्यटक आते हैं। इस शोध पत्र में राजस्थान के प्रमुख पर्यटन स्थलों के भौगोलिक अध्ययन के साथ-साथ पर्यटन विकास के सरकारी प्रयासों का भी अध्ययन किया गया है।

मुख्यशब्द: राजस्थान, पर्यटन विकास, भौगोलिक अध्ययन, पर्यटन स्थल, महत्व

परिचय

राजस्थान को "राजाओं का निवास" माना जाता है, यह अपने ऐतिहासिक स्थानों, शहरों में इतिहास की समृद्ध विरासत को संजोए हुए है और इसमें जीवंत, हलचल भरे शहर, उजाड़ रेगिस्तान और पारंपरिक जीवन शैली शामिल है। भारत का सबसे बड़ा राज्य राजस्थान अपने आकर्षणों के लिए जाना जाता है और देश में पर्यटन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण है। चाहे वह इसकी राजधानी जयपुर के दिलचस्प महल हों, अरावली पर्वतमाला के ऊपरी स्तर से घिरी उदयपुर की सुंदर झीलें हों, विश्व प्रसिद्ध बाघ अभयारण्य हों या उल्लेखनीय थार रेगिस्तान; विविधतापूर्ण राज्य निश्चित रूप से अपनी छाप छोड़ता है। राजस्थान के ऐतिहासिक स्थानों ने भारत की राष्ट्रीय विरासत को बनाए रखने और मजबूत करने में महत्व दिखाया है। इसके अलावा, राजस्थान में घूमने के लिए कई अनोखी जगहें इसे दुनिया भर के लोगों के लिए एक

लोकप्रिय छुट्टी गंतव्य बनाती हैं। अन्य राज्यों की तरह राजस्थान का भी अपना इतिहास, किले और स्मारक हैं जो वीर योद्धाओं की गाथा बताते हैं जो अपनी बहादुरी और राष्ट्र प्रेम के लिए आज भी पूजनीय हैं।

राजस्थान- भारत का रेगिस्तानी राज्य भूगोल में काफी भिन्न है। यह प्राकृतिक संसाधनों से बेहद समृद्ध है और साथ ही अपनी सांस्कृतिक विविधता के लिए प्रसिद्ध है। भौगोलिक दृष्टि से, कोई भी अन्य क्षेत्र राजस्थान से अधिक विविधता का दावा नहीं कर सकता है - लुढ़कते रेत के टीलों और ऊंची पहाड़ियों, जमा देने वाली ठंड और चिलचिलाती गर्मी, पूर्व में उपजाऊ मैदान और पश्चिम में कम आबादी वाले क्षेत्र। 3,42,239 वर्ग किमी (132139 वर्ग मील) के भौगोलिक क्षेत्रफल के साथ राजस्थान देश का सबसे बड़ा राज्य है। यह भारत के उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित है। ग्लोब पर स्थान के अनुसार, राजस्थान उत्तरी और पश्चिमी गोलार्ध में स्थित है, जिसका अधिकांश भाग कर्क रेखा के उत्तर में है। कर्क रेखा बांसवाड़ा शहर के दक्षिण से होकर गुजरती है। राज्य का विस्तार 23°3' से 30°12' उत्तरी अक्षांश और 69°30' से 78°17' पूर्वी देशांतर के बीच है। अनियमित समचतुर्भुज आकार (विषम चतुर्भुज) प्रस्तुत करने वाले इस राज्य की उत्तर से दक्षिण तक अधिकतम लंबाई 826 किमी है (उत्तर में श्रीगंगानगर जिले का कोना गांव से दक्षिण में बांसवाड़ा जिले का बोरकुंड गांव तक) और पश्चिम से पूर्व तक 869 किमी (पश्चिम में जैसलमेर जिले का कटरा गांव से पूर्व में धौलपुर जिले का सिलाना गांव तक)।

राजस्थान में पर्यटन

राजस्थान भारत का एक राज्य है जो पर्यटन के लिए सबसे अच्छा राज्य माना जाता है। राजस्थान राज्य में हर ज़िले में कई दर्शनीय स्थल देखने को मिलते है, यहां विशेषरूप से दुर्ग है जो लगभग हर ज़िले में है। इनके अलावा राजस्थान में कई पौराणिक मन्दिर भी है।

प्राकृतिक सुंदरता और महान इतिहास से संपन्न राजस्थान में पर्यटन उद्योग समृद्धिशाली है। राजस्थान देशीय और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों, दोनों के लिए एक उचित पर्यटन स्थल है। भारत की सैर करने वाला हर तीसरा विदेशी सैलानी राजस्थान देखने ज़रूर आता है क्योंकि यह भारत आने वाले पर्यटकों के लिए "गोल्डन ट्रायंगल" का हिस्सा है। जयपुर के महल, उदयपुर की झीलें और जोधपुर, बीकानेर तथा जैसलमेर के भव्य दुर्ग भारतीय और विदेशी सैलानियों के लिए सबसे पसंदीदा जगहों में से एक हैं। इन प्रसिद्ध स्थलों को देखने के लिए यहाँ हज़ारों पर्यटक आते हैं। जयपुर का हवामहल, जोधपुर, बीकानेर के धोरे और जैसलमेर के धोरे काफी प्रसिद्ध हैं। जोधपुर का मेहरानगढ़ दुर्ग ,सवाई माधोपुर का रणथम्भोर दुर्ग एवं चित्तौड़गढ़ दुर्ग काफी प्रसिद्ध है। यहाँ राजस्थान में कई पुरानी हवेलियाँ भी है जो वर्तमान में हैरीटेज होटलें बन चुकी हैं। पर्यटन ने यहाँ आतिथ्य क्षेत्र में भी रोज़गार को बढ़ावा दिया है। यहाँ की मुख्य मिठाई "जलेबी" है।

राजस्थान की सीमाएं

राज्य की कुल सीमा 5920 किमी है, जिसमें से 4850 किमी अंतरराज्यीय सीमा और 1070 किमी अंतरराष्ट्रीय सीमा है। राज्य की पश्चिमी सीमा भारत-पाक अंतरराष्ट्रीय सीमा का हिस्सा है, जो क्षेत्र के चार मुख्य जिलों श्रीगंगानगर (210 किमी) बीकानेर (168 किमी) जैसलमेर (464 किमी) और बाड़मेर (228 किमी) को छूती है। इसे 'रेडक्लिफ रेखा' कहा जाता है। राज्य के उत्तर में पंजाब और हरियाणा राज्य, पूर्व में उत्तर प्रदेश, दक्षिण-पूर्व में मध्य प्रदेश और दक्षिण-पश्चिम में गुजरात स्थित हैं।

राजस्थान का भौगोलिक अवलोकन

भारत के पश्चिम में रेगिस्तानी क्षेत्र में स्थित होने के कारण, राजस्थान को 'मरु प्रदेश' कहा जाता है। राजस्थान का रेगिस्तानी क्षेत्र दुनिया के उन कुछ उष्णकटिबंधीय रेगिस्तानों में से है, जहाँ जनसंख्या घनत्व सबसे अधिक है। इसकी भौगोलिक स्थिति 23°3' से 30°12' अक्षांश और 69°30' से 78°17' पूर्वी देशांतर के बीच है। पाँच अंतर-राज्यीय सीमावर्ती राज्य पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और गुजरात हैं, साथ ही पाकिस्तान के साथ अंतर्राष्ट्रीय सीमा भी है। राज्य का क्षेत्रफल दुनिया के कुछ देशों जैसे इटली (3,01,200 वर्ग किमी.), पोलैंड (3,12,600 वर्ग किमी.) और नॉर्वे (3,24,200 वर्ग किमी.) के लगभग बराबर है। क्षेत्र के पुराने पुरातात्विक इतिहास में लूनी बेसिन, बुद्ध पुष्कर, घाघरा घाटी, कालीबंगा, पीलीबंगा और सांचौर के कुछ स्थलों पर पाषाण युग के औजारों की खोज से पता चलता है कि इस क्षेत्र में आदिमानव निवास करता था। लगभग छह से दस हजार साल पहले, इस क्षेत्र में मानव निवास के लिए अनुकूल जलवायु थी। यह केवल बाद के युगों में था, और अधिक प्रमुख रूप से पिछले हजार वर्षों में जलवायु परिस्थितियां धीरे-धीरे प्रतिकूल हो गईं और प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र का क्षरण मनुष्य की अंधाधुंध आर्थिक गतिविधियों से बढ़ गया। राजस्थान ने कृषि उत्पादन, खनिज संसाधनों के दोहन, ऊर्जा संसाधनों के उत्पादन और परिवहन और संचार के साधनों के विकास जैसे कई क्षेत्रों में प्रभावशाली प्रगति की है, लेकिन मानव और पशुधन आबादी की समानांतर वृद्धि से आर्थिक विकास की दर काफी हद तक धीमी हो गई है।

उद्देश्य:-

1. राजस्थान में पर्यटन संख्या तथा पर्यटक परिपथों का क्षेत्रीय अध्ययन करना।
2. राज्य के परिवहन तन्त्र तथा पर्यटन स्थलों के मध्य मार्ग जाल सू- सम्बंधता को ज्ञात करना।

शोध-प्रविधिया:-

शोध पत्र में विष्लेषण के लिए द्वितीयक आंकड़ों उपयोग में लिए गए हैं। आंकड़ों के विश्लेषण के लिय सांख्यिकीक विधिया (कार्ल पिर्यसन सम्बंध गुणांक विधि), दण्ड आरेख विधि, सारणीकरण विधि, ग्राफिक विधि तथा यातायात जाल विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया हैं।

शोध- विष्लेषण:-

राजस्थान में पर्यटकों का प्रादेषिक विवरण:-

राजस्थान में वर्ष 2015 के अन्तर्गत जयपुर जिले 40.45 प्रतिषत के साथ विदेषी पर्यटकों के आगमन में प्रथम स्थान पर हैं। जबकि उदयपुर तथा जोधपुर राज्य के कुल पर्यटकों का क्रमषः 11.22 प्रतिषत व 8.59 प्रतिषत हिसा रखते है। स्वदेषी पर्यटकों का सर्वाधिक पसंधिदा स्थान क्रमषः अजमेर(12.92र प्रतिषत), पुष्कर(1076 प्रतिषत) तथा माउण्ट आबू(5.73 प्रतिषत)रहे है।

तालिका 1 राजस्थान में पर्यटकों का प्रादेषिक विवरण

क्रसa	पर्यटक स्थल	पर्यटकों की संख्या (2015)					
		स्वदेशी		विदेशी		योग	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	माउण्ट आबू	2017636	5.73	1598	0.11	2019234	5.51
2	उदयपुर	727266	2.07	165525	11.22	892791	2.44
3	जयपुर	1201152	3.41	596756	40.45	1797908	4.90
4	पुष्कर	3786360	10.76	69494	4.71	3855854	10.52
5	जोधपुर	598967	1.70	126772	8.59	725739	1.98
6	अजमेर	4546300	12.92	36423	2.47	4582723	12.50
7	जैसलमेर	266175	0.76	84533	5.73	350708	0.96
8	नाथद्वारा	637722	1.81	10	0.00	637732	1.74
9	चित्तौड़गढ	640688	1.82	38879	2.64	679567	1.85
10	भरतपुर	66322	0.19	39608	2.68	105930	0.29
11	बीकानेर	348772	0.99	60767	4.12	409539	1.12
12	रणकपुर	532039	1.51	102994	6.98	635033	1.73
13	कोटा	90598	0.26	2574	0.17	93172	0.25
14	सवाई माधोपुर	85200	0.24	67935	4.60	153135	0.42
15	झुन्झुनू	86555	0.25	37420	2.54	123975	0.34
16	बांसवाड़ा	113410	0.32	82	0.01	113492	.31
17	अलवर	95787	0.27	10634	0.72	106421	0.29
18	सरिस्का	14487	0.04	150	0.01	14637	0.04
19	ऋषभदेव	25800	0.07	0	0.00	25800	0.07
20	बून्दी	54574	0.16	15290	1.04	69864	0.19
21	सीकर	48305	0.14	16	0.00	48321	0.13
22	सिलीसेढ	2071	0.01	0	0.00	2071	0.01
23	बहरोड़	3650	0.01	31	0.00	3681	0.01
24	झालावाड़	92426	0.26	114	0.01	92540	0.25
25	अन्य	9105311	54.30	17706	1.20	9123017	52.16
	योग	5187573	100.00	1475311	100.00	36662884	100.00

राजस्थान में परिवहन तन्त्रः-

आधुनिक समय में परिवहन तन्त्र की बढती जटीलता एवं साधनों की संख्या में वृद्धि किसी भी क्षेत्र के आर्थिक समृद्धि का सूचक हैं। यातायात का विकास, पर्यटन की बुनियादी संरचना से संबंधित एक प्रमुख पहलु है। यह एक प्राथमिक पर्यटन सेवा है। पर्यटन स्थलों की एक विषेषता यह होनी चाहिए वहा तक आसानी से पहुंच सकें। इसके तहत परिवहन द्वारा पहुँच शामिल है। इस अभिागम्यता के कारण ब्रिटेन एवं पिष्चिमी यूरोप पर्यटन स्थलों हेतु लिए समुन्नत एवं महतवपूर्ण क्षेत्र है।5 राजस्थान जैसे ऐतिहासिक विरासत, संस्कृतिक विविध एवं प्राचिन सभ्यताओं वाले प्रदेष में परिवहन के संसाधन तथा पर्यटन केन्द्रों के मध्य संयोजकता पर्यटन उद्योग की आधारभूत आवष्यक्ताओं में प्रातमिक जरूरत हैं। वर्ष 2015 में राजस्थान में 3.66 करोड़ पर्यटकों के साथ 1475 लाख विदेषी तथा 5.9 प्रतिषत वृद्धि दर्ज हुई। इस वृद्धि का श्रेय पर्यटन विभाग राजस्थान व राजस्थान सरकार द्वारा किया गया परिवहन सुविधाओं में प्रयास रहा है।6 राज्य में अधिक एवं अच्छी परिवहन सुविधाओं के विकास होने पर ही आज राजस्थान पर्यटन उद्योग अपनी स्थिति विष्व मानचित्र में रख पाया हैं। राजस्थान में सड़क, रेल व वायु मार्ग तीनों ही हैं किन्तु राज्य की विषालता को देखते हुए सभी मार्गों की लम्बाई बहुत ही कम, अतः इनके विकास की आवष्यकता स्पष्ट द्द ष्टिगोचर होती हैं। राजस्थान में प्रमूख परिवहन के साधनों के रूप में सड़कें व रेलमार्ग हैं। राज्य में वर्तमान में रेलों की लम्बाई 5784.16 किमी. और सड़कों की लम्बई 192551 किमी. हैं। राज्य में सड़कों की लम्बई प्रति 100 वर्ग किमी. में 56.00 किमी. हैं जो कि राष्ट्रीय औसत 125.00 किमी. से बहुत कम है। राज्य में वर्तमान में प्रति हजार वर्ग किमी. क्षेत्रफल में रेलमार्ग की औसत लम्बाई 16.90 किमी. हैं। राजस्थान में प्रमुख पर्यटन मार्ग के अन्तर्गत राजस्थान मार्ग, हवामहल मार्ग, मेवाड मार्ग तथा मरूस्थली मार्ग सम्मिलित है, जो राज्य के मुख्य पर्यटन केन्द्रों को आपस में जोड ते है। अतः यातायात एवं संचार सुविधाऐं ही पर्यटन उद्योग की रीढ़ है।

राज्य के पर्यटन स्थलों में परिवहन जाल संयोजकता किस प्रकार से है ?

राजस्थान को प्रमुख पर्यटन केन्दों के मध्य सूसम्बधता सूची के आधार पर तीन स्तरों में विभगत किया गया है- अधिक सूसम्बधता, मध्य सूसम्बधता तथा निम्न सूसम्बधता । राज्य के पष्चिमी पर्यटन केंद्रों के मध्य सूसम्बधता जैसलमेर में 1 तथा बीकानेर व जोधपुर में 3 है। वही दूसरी ओर मध्यवृति प्रदेष अजमेर में 6 है। दक्षिणी-पूर्वी पठारी प्रदेष कोटा, बून्दी तथा बांसवाड़ा में सूसम्बधता क्रमषः 1, 3 व 1 मान रखती है। दक्षिण के पर्वतिय प्रदेष में सर्वाधिक मान उदयपुर (5) का है। अन्य में रणकपुर 3 तथा माउण्ट आबू 2 सूसम्बधता मान रखता है।

तालिका 2 राजस्थान को प्रमुख पर्यटन केन्दों के मध्य सूसम्बधता

क्र. स.	स्तर	मान	पर्यटन स्थल
1.	अधिक सूसम्बधता	6 व अधिक	जयपुर, अजमेर

2.	मध्य सूसम्बधता	3 व 6 के मध्य	उदयपुर, जोधपुर, चित्तौड़गढ, बीकानेर, रणकपुर, सवाई माधोपुर, बून्दी, सीकर
3.	निम्न सूसम्बधता	3 से कम	माउण्ट आबू, पुष्कर, जैसलमेर, भरतपुर, कोटा, झुन्झुनू, बांसवाड़ा, अलवर, सरिस्का, बहरोड, झालावाड

क्या राज्य में परिवहन जाल संयोजकता पर्यटन स्थलों पर पर्यटकों की संख्या को प्रभावित करती है ?

राज्य में परिवहन जाल संयोजकता पर्यटन स्थलों को प्रभावित कर रही हैं। जयपुर का संयोजक मान 8 तथा उदेयपुर का संयोजक मान 5 है एवं इनमे आने वाले पर्यटकों का प्रतिषत क्रमषः 40.45 व 11.22 है। आरेख 1.2 तथा गणना से प्राप्त गुणांक - 0.74 से स्पष्ट होता है कि पर्यटकों की संख्या चर एवं परिवहन जाल संयोजकता के मध्य में धनात्मक मध्यय सहसम्बन्ध है।

राजस्थान के प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थल एवं विरासत स्थल

राजस्थान राजाओं का देश है। इस राज्य पर कई राजाओं का शासन रहा है, चाहे वह टुकड़ों में हो या पूरे राज्य में। यही कारण है कि इस स्थान पर कई तरह के ऐतिहासिक चमत्कार हैं। इस राज्य में कई ऐतिहासिक स्थल हैं, जिन्हें प्रतिष्ठित आकर्षण का खिताब मिला है। यह पोस्ट राजस्थान के उन शीर्ष ऐतिहासिक स्थलों पर केंद्रित होगी, जो देखने लायक हैं। इस राज्य में आने वाले किसी भी व्यक्ति को इस क्षेत्र की असली खूबसूरती को देखने के लिए इन क्षेत्रों में जाना चाहिए। राजस्थान टूर पैकेज में आपको जिन शीर्ष 5 ऐतिहासिक स्थलों पर जाना चाहिए, उनके बारे में यहां बताया गया है।

आमेर किला

कई पर्यटक इस किले में हाथियों की सवारी करने के लिए आते हैं। यह किला जयपुर में पाया जा सकता है। यह किला अतीत के भारतीय वास्तुकारों की वास्तुकला की प्रतिभा का प्रमाण है। इस किले का निर्माण 17वीं शताब्दी में हिंदू और मुस्लिम स्थापत्य शैली के संयोजन का उपयोग करके किया गया था। हर शाम, यहाँ रोशनी का प्रदर्शन होता है। इस किले में महल, मंदिर, उद्यान और कई अन्य संरचनाएँ हैं।

सिटी पैलेस

जयपुर सिटी पैलेस का घर है। इसका निर्माण 18वीं शताब्दी में हुआ था। इस महल की स्थापत्य शैली भारतीय और यूरोपीय शैलियों का मिश्रण है। प्रवेश द्वार इस महल की पहली प्रमुख विशेषता है। इसमें तीन प्रवेश द्वार हैं, जिनमें से प्रत्येक अपने आप में आश्चर्यजनक है। मुबारक महल महल का स्वागत क्षेत्र हुआ करता था। आप जयपुर से रणथंभौर वीकेंड टूर पर इसे देखने जा सकते हैं।

हवा महल

हवा महल को पवन महल के नाम से भी जाना जाता है। परदे वाली दीवारें, जो खुलने पर महल के अंदर और बाहर हवा को बहने देती हैं, महल को इसका नाम देती हैं। ये परदे महल के अंदर महिलाओं को सड़क पर चल रही गतिविधियों पर नज़र रखने की अनुमति देने के लिए बनाए गए थे। महल गुलाबी और लाल बलुआ पत्थर से बना है। इसे 18वीं शताब्दी में एक छत्ते के आकार में बनाया गया था।

रणथंभौर किला

यह सवाई माधोपुर में पशु अभ्यारण्य के अंदर 10वीं शताब्दी का किला है। यह थानभोर की पहाड़ियों के बीच स्थित है। इस किले के भीतर कई मंदिर, महल, बैरक और अन्य दर्शनीय स्थल पाए जा सकते हैं। जानवरों का यह आश्रय स्थल कभी राजा का शिकारगाह हुआ करता था। किले के भीतर 12वीं और 13वीं शताब्दी के तीन मंदिर हैं। इसके अलावा, भगवान सुमतिनाथ और सम्भवनाथ को समर्पित एक जैन मंदिर भी है। राजस्थान वन्यजीव यात्रा आपको किले को देखने में भी मदद करेगी।

चित्तौड़गढ़ किला

चित्तौड़गढ़ इस किले का घर है। यह एक शानदार किला है जो एक पहाड़ी पर बना है। यह किला 700 एकड़ भूमि में फैला हुआ है। इस किले ने अनगिनत संघर्ष देखे हैं और यह राजपूत बहादुरी और वीरता का प्रमाण है। किंवदंती के अनुसार, एक राजा राजपूत रानी की सुंदरता से मोहित हो गया था और उसे जीतने के लिए इस किले पर हमला किया था। जब दुश्मनों ने किले की दीवार को ध्वस्त कर दिया, तो रानी और उसके सेवकों ने आत्महत्या कर ली।

आप गो राजस्थान ट्रैवल के साथ राजस्थान और उसके ऐतिहासिक स्थानों की यात्रा कर सकते हैं। शहर के जंगलों का अनुभव करने के लिए रणथंभौर टूर के साथ गोल्डन ट्राएंगल का आनंद लें। आप राजस्थान में जयपुर, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, कुंभलगढ़ आदि घूमने के लिए एक छोटी पारिवारिक यात्रा कर सकते हैं। सभी जगहें असाधारण रूप से खूबसूरत हैं। हमारे साथ अपनी बुकिंग करें। हमने इस टूर की बेहतरीन योजना बनाई और इसे मैनेज किया। यह एक शानदार अनुभव होगा और उनका गाइड वाकई मददगार और ज्ञानवर्धक था।

निष्कर्ष

राजस्थान के ऐतिहासिक स्थलों के भौगोलिक शोध के निष्कर्षों के अनुसार, राज्य की भौगोलिक स्थिति इसकी सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परंपराओं के विकास में एक महत्वपूर्ण कारक रही है। न केवल अरावली पर्वतमाला, थार रेगिस्तान और प्रमुख नदियों का राजस्थान की जलवायु और स्थलाकृति पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है, बल्कि इनका राज्य की वास्तुकला, शहर की डिजाइन और किलेबंदी पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। जयपुर, उदयपुर, जैसलमेर और चित्तौड़गढ़ ऐतिहासिक स्थानों के उदाहरण हैं जो अपने-अपने भौगोलिक स्थानों में परिवर्तन के अनुरूप विकसित हुए हैं। इन स्थानों की भौगोलिक स्थिति ने सांस्कृतिक, वाणिज्यिक और सैन्य वस्तुओं के प्रवाह में भूमिका निभाई थी। सभी बातों को ध्यान में रखते हुए, राजस्थान के ऐतिहासिक स्थानों का भौगोलिक विश्लेषण यह स्पष्ट रूप से स्पष्ट करता है

कि राज्य का इतिहास और भूगोल जटिल रूप से जुड़ा हुआ है, जिसके परिणामस्वरूप एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का निर्माण हुआ है।

संदर्भ सूची

1. हंसराज काजला (2018),सीकर जिले में पर्यटन विकास एवं संभावनाए, ऐसेन्ट इन्टरनेषनल जर्नल फोर रिसर्च ऐनालायसिस, टव्स्ण्.ससस (मार्च-अप्रैल) पृ.-62.1.

2. डा. भरत पारीक (2017), राजस्थान के आर्थिक विकास में पर्यटन उद्योग का महत्व, ऐसेन्ट इन्टरनेषनल जर्नल फोर रिसर्च ऐनालायसिस, टव्स्ण्.सस (अक्टूबर-दिसम्बर) पृ.-45.4.

3. डा. सुरेष चन्द्र बंसल (2016), पर्यटन सिद्धान्त एवं यात्रा प्रबन्धन, मीनाक्षी प्रकाषन, मेरठ, पृ.-6.

4. डाॅ. हरि मोहन सक्सेना (2018), राजस्थान को भूगोल, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृ.-6.

5. डा. विमल कुमार कपूर (2009), पर्यटन भूगोल, विष्व भारती पब्लिकेषन्स, नई दिल्ली, पृ पृ. 27-35.

6. बाबू लाल मीणा, श्रवण कुमार मीणा (2017),राजस्थान में पर्यटन उद्योग एवं आर्थिक विकास में योगदान,

7. ऐसेन्ट इन्टरनेषनल जर्नल फोर रिसर्च ऐनालायसिस, टव्स्ण्.ससस (मार्च-अप्रैल) पृ.-17.5.

8. डा. जे. के. शर्मा (2017), प्रगतिष्ील राजस्थान को भूगोल, आस्था प्रकाषन, जयपुर, पृ पृ. 631-643.

9. अनंतरामु, टी.आर., बेल्लूर, डी. और भास्कर, ए.ए. (2001): राष्ट्रीय भूवैज्ञानिक स्मारक; जियोल. सर्व. इंड. स्पेशल. पब्लिकेशन नंबर 61, पृ. 98.

10. भूषण, एस.के. (1977): मंडली ज्वालामुखी वेंट और विदर नियंत्रित डाइक पर एक रिपोर्ट; बाड़मेर और जोधपुर जिले के कुछ हिस्सों में मालानी आग्नेय सुइट के भूविज्ञान और संरचनाओं में। एफएस 1976-77 के लिए अप्रकाशित जीएसआई रिपोर्ट।

11. गथानिया, आर.सी, चावड़े, एम.पी., घोष, पी.के. और चंद्रशेखरन, वी. (1984): बाड़मेर जोधपुर, जालोर और पाली जिलों, राजस्थान के कुछ हिस्सों में मालानी आग्नेय सुइट के व्यवस्थित भूवैज्ञानिक मानचित्रण पर एक रिपोर्ट। एफएस 1981-82 के लिए अप्रकाशित जीएसआई रिपोर्ट

12. ग्रोवर, ए.के. (2006): भुकिया-जगपुरा संभावना और आसपास के क्षेत्रों, दक्षिण-पूर्वी राजस्थान के प्राचीन स्वर्ण पान स्थलों और पत्थर पीसने के उपकरणों की मुख्य विशेषताएं, जर्नल जियोल सोसायटी इंड. खंड 67, पृ. 523-531.

13. ग्रोवर, ए.के. (2016): हमारे राष्ट्रीय भूविज्ञान स्मारक; भूगौरव. जियोल सोसायटी इंड. पश्चिमी क्षेत्र हिंदी पत्रिका; खंड 16, पृ. 1-14.

14. जीएसआई डब्ल्यूआर, 2013: राजस्थान और गुजरात में राष्ट्रीय भूवैज्ञानिक स्मारक और अन्य भू-विरासत स्थल। भू-विरासत पर राष्ट्रीय कार्यशाला और विचार-मंथन सत्र की कार्यवाही - भारतीय सक्रियता की आवश्यकता, 30-31 मई, पृ. 70-75.

15. कुमार, एन. और शर्मा, आर. (2021): टेक्टोनिक्स और मैग्माटिज्म पर जोर देने के साथ नाकोरा रिंग कॉम्प्लेक्स की पेट्रोलॉजी और जियोकेमिस्ट्री, नियोप्रोटेरोज़ोइक मालानी इग्नियस सूट, पश्चिमी राजस्थान, भारत। ज्वालामुखी विज्ञान में प्रगति, पीपी 171-190।

16. पांडे, डी.के., फुर्सिच, एफ.टी. और अल्बर्टी, एम. (2014): जैसलमेर बेसिन की जुरासिक चट्टानों की स्ट्रेटीग्राफ़ी और पैलियो-पर्यावरण - फ़ील्ड गाइड। जुरासिक सिस्टम पर 9वीं अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

17. सिन्हा, बी.एन. (1948): एफएस 1947-48 के लिए प्रगति रिपोर्ट। अप्रकाशित जीएसआई रिपोर्ट।